



Ancient Vedic Mantras and Rituals





**Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-15 |
श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक पंद्रह | PDF**

अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग

श्लोक 15

श्रीभगवानुवाच ।

**एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥15॥**

सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

इस सत्य को जानकर प्राचीन काल में मुक्ति की इच्छा रखने वाले महापुरुषों ने भी अपने कर्तव्य कर्म किए थे। इसलिए हे अर्जुन! तुम भी अपने कर्तव्य कर्म को उसी प्रकार करो, जिस प्रकार प्राचीन महापुरुषों ने किया था।

विस्तृत व्याख्या

प्राचीन महापुरुषों ने भी कर्म किए

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि प्राचीन



काल के उन महापुरुषों ने भी अपने कर्तव्यों का पालन किया था, जो मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखते थे।

उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी कर्मों से पूरी तरह मुंह नहीं मोड़ा। वे अपने कर्तव्यों को धर्म और समर्पण की भावना से निभाते रहे।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक जीवन का अर्थ अपने सभी कर्मों और जिम्मेदारियों को छोड़ देना नहीं है।

ज्ञान के साथ कर्म करने का महत्व

भगवान बताते हैं कि प्राचीन महापुरुष कर्म के वास्तविक स्वरूप को समझते थे। वे जानते थे कि कर्म करते हुए भी उसके फल के प्रति मोह और आसक्ति को छोड़ा जा सकता है।

जब कर्म ज्ञान, विवेक और धर्म की भावना से किया जाता है, तब वही कर्म आत्मिक उन्नति का साधन बन सकता है।

अर्जुन को कर्तव्य पालन की प्रेरणा

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को अपने कर्तव्य से पीछे हटने के बजाय उसे पूरा करने की प्रेरणा देते हैं।

अर्जुन युद्धभूमि में अपने कर्तव्य को लेकर भ्रमित था। श्रीकृष्ण उसे समझाते हैं कि कठिन परिस्थिति देखकर अपने धर्म और जिम्मेदारी से भागना उचित नहीं है।

उसे अपने कर्तव्य का पालन उचित भावना और आत्मज्ञान के साथ करना चाहिए।



कर्म का त्याग नहीं, कर्मफल की आसक्ति का त्याग

इस श्लोक का एक महत्वपूर्ण संदेश यह है कि केवल कर्मों को छोड़ देना ही सच्चा त्याग नहीं है।

वास्तविक त्याग कर्मफल के प्रति स्वार्थपूर्ण आसक्ति को छोड़ना है। मनुष्य को अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से करना चाहिए, लेकिन उसके परिणाम को लेकर अत्यधिक चिंता, मोह और अहंकार नहीं रखना चाहिए।

महापुरुषों के आचरण से प्रेरणा

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को प्राचीन महापुरुषों के उदाहरण से समझाते हैं।

महान व्यक्तियों का आचरण समाज के लिए मार्गदर्शक बनता है। जब कोई व्यक्ति धर्मपूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करता है, तो उसका जीवन स्वयं के साथ-साथ दूसरों के लिए भी प्रेरणा बन जाता है।

मुक्ति की इच्छा रखने वाले व्यक्ति का कर्तव्य

मुक्ति की इच्छा रखने वाला व्यक्ति संसार की जिम्मेदारियों से भागने के बजाय उन्हें सही दृष्टिकोण से समझता है।

वह अपने कर्मों को स्वार्थ और अहंकार से मुक्त करने का प्रयास करता है। इस प्रकार उसके दैनिक कर्तव्य भी आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक साधना का माध्यम बन सकते हैं।

ज्ञान और कर्म का समन्वय

यह श्लोक ज्ञान और कर्म के बीच संतुलन स्थापित करता है।



सिर्फ ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। उस ज्ञान के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करना भी आवश्यक है। जब व्यक्ति ज्ञानपूर्वक और निष्काम भाव से कर्म करता है, तब कर्म उसके आध्यात्मिक विकास में सहायक बनता है।

मुख्य बिंदु

- प्राचीन महापुरुषों ने भी अपने कर्तव्यों का पालन किया था।
- मुक्ति की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए कर्म करना बाधा नहीं है।
- ज्ञान के साथ किया गया कर्म आत्मिक उन्नति का साधन बन सकता है।
- अर्जुन को अपने कर्तव्य से पीछे न हटने की प्रेरणा दी गई है।
- केवल कर्मों को छोड़ देना ही सच्चा त्याग नहीं है।
- कर्मफल के प्रति आसक्ति का त्याग अधिक महत्वपूर्ण है।
- महापुरुषों का आचरण जीवन के लिए प्रेरणादायक होता है।
- कर्तव्य का पालन धर्म, ज्ञान और समर्पण की भावना से करना चाहिए।
- कर्म और ज्ञान का उचित समन्वय आध्यात्मिक प्रगति में सहायक है।
- निष्काम कर्म मनुष्य को आत्मशुद्धि और मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ाता है।



गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

इस श्लोक का गहरा संदेश यह है कि **मुक्ति प्राप्त करने के लिए कर्मों से भागना आवश्यक नहीं है।** प्राचीन काल के अनेक महापुरुषों ने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए ही आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त की।

भगवान श्रीकृष्ण समझाते हैं कि कर्म जीवन का आवश्यक हिस्सा है। बंधन कर्म करने से नहीं, बल्कि कर्म के फल के प्रति अत्यधिक मोह, अहंकार और स्वार्थपूर्ण इच्छा से उत्पन्न होता है।

जब व्यक्ति अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाता है और उसके फल को भगवान को समर्पित करता है, तब उसका कर्म धीरे-धीरे साधना का रूप ले लेता है।

इसलिए मनुष्य को अपनी जिम्मेदारियों से भागने के बजाय उन्हें ज्ञान, विवेक और समर्पण के साथ पूरा करना चाहिए। **प्राचीन महापुरुषों के आदर्श से प्रेरणा लेकर किया गया निष्काम कर्म व्यक्ति को आत्मशुद्धि, आत्मज्ञान और मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ाता है।**

पदों का भावार्थ

एवम् – इस प्रकार

ज्ञात्वा – जानकर, समझकर

कृतम् – किया गया

कर्म – कर्म, कार्य



पूर्वैः – पूर्वजों द्वारा, प्राचीन महापुरुषों द्वारा

अपि – भी

मुमुक्षुभिः – मुक्ति की इच्छा रखने वालों द्वारा

कुरु – करो

कर्म – कर्म, कर्तव्य

एव – ही

तस्मात् – इसलिए

त्वम् – तुम

पूर्वैः – पूर्वजों द्वारा

पूर्वतरम् – प्राचीन समय में

कृतम् – किया गया

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि प्राचीन काल के मुक्ति की इच्छा रखने वाले महापुरुषों ने भी ज्ञान के साथ अपने कर्तव्य कर्म किए थे। इसलिए अर्जुन को भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटना चाहिए।

यह श्लोक सिखाता है कि **कर्मों का त्याग करना ही आध्यात्मिकता नहीं है। सही ज्ञान, निष्काम भावना और भगवान के प्रति समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का पालन**



करना भी मुक्ति का मार्ग बन सकता है। अपने पूर्वजों और महान महापुरुषों के आदर्शों से प्रेरणा लेकर किया गया कर्तव्य कर्म मनुष्य को आत्मशुद्धि, आत्मज्ञान और मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ाता है।

RELATED ARTICAL



अध्याय चार-श्लोक तेरह



अध्याय चार-श्लोक चौदह



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

